

सुमित्रानंदन पंत

(जन्म : सन् 1900 ई., निधन : सन् 1977 ई.)

प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत का जन्म उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले के कौसानी गाँव में हुआ था । उनकी प्रारंभिक शिक्षा कौसानी और अल्मोड़ा में हुई । मैट्रिक उत्तीर्ण करके आगे की पढ़ाई के लिए पहले वाराणसी फिर प्रयाग गये । सन् 1921 के गाँधीजी के असहयोग आंदोलन के कारण पढ़ाई छोड़ दी । सन् 1943-44 ई. में उदयशंकर के नृत्यकेन्द्र से संबंध और 'कल्पना' चित्र के निर्माण में सहयोग, सन् 1950 से 1957 तक 'आकाशवाणी' में हिन्दी सलाहकार रहे । छायावाद के शलाका-पुरुष, प्रकृति सौंदर्य के अनुपम चित्रकार, काव्यभाषा के समर्थ शिल्पी प्रौढ़ विचारक-कवि को इनके 'कला और बूढ़ा चाँद' पर साहित्य अकादमी से 'लोकायतन' पर सोवियत भूमि नेहरू पारितोषिक समिति से और 'चिदंबरा' पर ज्ञानपीठ पुरस्कार मिले हैं । इनकी कविता छायावाद मार्क्सवाद, अरविंददर्शन, वैदिक चिंतन के सोपानों से बढ़ती हुई विश्वचेतना तक पहुँचती है । उन्हें पद्मविभूषण भी मिला है । 'वीणा', 'ग्रंथि', 'पल्लव', 'गुंजन', 'युगान्त युगवाणी', 'मधुज्वाल', 'ग्राम्या', 'युगपथ', 'कला' और 'बूढ़ा चाँद' आदि प्रमुख काव्य लिखे हैं । इनके अलावा नाटक, नीतिनाट्य, कहानी और उपन्यास भी लिखे हैं ।

जन्मभूमि काव्य में जन्मभूमि का महत्त्व बताते हुए पंतजी ने प्रकृति का गौरव गान किया है । भारत का वैभवशाली इतिहास, प्रकृति, महापुरुषों का वर्णन किया है । हमारे नारीरत्नों की बात बताते हुए पंतजी ने वसुधैव कुटुंबकम् की भावना साकार की है ।

जननी जन्मभूमि प्रिय अपनी, जो स्वर्गादपि चिर गरीयसी
जिसका गौरव भाल हिमाचल,
स्वर्ण धरा हँसती चिर श्यामल,
ज्योतिग्रथित गंगा यमुना जल,
वह जन जन के हृदय में बसी !

जिसे राम लक्ष्मण औ सीता
बना गए पद धूलि पुनीता,
जहाँ कृष्ण ने गाई गीता
बजा अमर प्राणों में वंशी !

सावित्री राधा-सी नारी
उतरीं आभादेही प्यारी,
शिला बनी तापस सुकुमारी
जड़ता बनी चेतना सरसी !

शांति निकेतन जहाँ तपोवन
ध्यानावस्थित हो ऋषि मुनि गण,
चिद् नभ में करते थे विचरण
जहाँ सत्य की किरणें बरसीं !

आज युद्धजर्जर जगजीवन
पुनः करेगा मंत्रोच्चारण,
वह वसुधैव बना कुटुंबकम्
उसके मुख पर ज्योति नवल-सी !

जननी जन्मभूमि प्रिय अपनी, जो स्वर्गादपि चिर गरीयसी ।

शब्दार्थ

गरीयसी श्रेष्ठ ज्योतिग्रथित ज्योति से गुँथा हुआ आभा प्रकाश जर्जर जीर्णशील वसुधा पृथ्वी स्वर्गादपि स्वर्ग से भी चिद् चेतना, ज्ञान

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

(1) जननी जन्मभूमि से महान है ।

(अ) पृथ्वी

(ब) आकाश

(क) स्वर्ग

(ड) नर्क

(2) 'भारत का भाल' है ।

(अ) हिमाचल

(ब) विंध्याचल

(क) माउन्ट आबू

(ड) गिरनार

(3) गीता का गान करनेवाले थे ।

(अ) वाल्मिकी

(ब) द्रोणाचार्य

(क) अर्जुन

(ड) कृष्ण

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) जन-जन के हृदय में कौन-सी नदियाँ बसी हैं ?

(2) कृष्ण ने किस ग्रंथ की रचना की ?

(3) 'जन्मभूमि' में भारत की किन नारियों की बात बताई गई है ?

(4) शांतिनिकेतन क्या है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) हिमालय के बारे में जन्मभूमि कविता में क्या कहा है ?

(2) कवि ने धरती के गुनगान कैसे गाये हैं ?

(3) शांति, सत्य, अहिंसा का प्रचार करनेवाले 'भारतीय महापुरुषों' के नाम बताइए ।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) कवि ने जन्मभूमि को स्वर्ग से महान क्यों बताया है ?

(2) 'जन्मभूमि' में भारत भूमि की क्या-क्या विशेषताएँ बताई गई हैं ?

(3) कविता के आधार पर भारतीय नारी की महानता का वर्णन कीजिए ।

(4) भारत 'विश्व शांतिदूत' क्यों कहलाता है ?

5. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए :

(1) जिसका गौरव भाल हिमाचल ।

(2) जड़ता बनी चेतना सरसी !

(3) वह वसुधैव बना कुटुंबकम् ।

6. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द दीजिए :

जननी, ज्योति, शिला, विचरण, गौरव, पुनीत

योग्यता-विस्तार

● इस गीत का सहगान कीजिए ।

● बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय रचित 'वंदेमातरम्' गीत याद कीजिए और उसकी तुलना इस काव्य से कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

● 'अनेकता में एकता' विषय पर छात्रों को बताइए ।

● भारत के विभिन्न प्रदेशों के नृत्य पर आधारित एक कार्यक्रम का आयोजन कीजिए ।

●